

तेरे बिन ओ कन्हैया में रह न पाऊगी
तेरी वंशी की धुन पे, दोड़ी दोड़ी आऊगी --- तेरे बिन ---
① मेंने हाथों में मेंदी रचाई, बिंदिया मध्ये पे मेंने रखाई
पोव की पायल दम दम बजाई, तेरी सूरतिया में मन भाई
खुद नाँ चूगी, तुम्हको न चाँऊगी --- तेरी वंशी ---

तेरे बिन ओ --- तेरी वंशी ---
② नाँक में नयनी होले होले डोले, भेद जियर के मेरे वोखोले
श्याम राधा से धीरे से बोले, प्यार में प्रीत का रख वोखोले
बात अपनी किसी को न बतलाऊगी --- तेरी वंशी ---
तेरे बिन ओ --- तेरी वंशी ---

③ श्याम के बिन रहे राधा अधूरी करना कन्हान मुझसे तू दूरी
कैसे दिल में रखूगी सबूरी, बात दिल की न कर पाई पूरी
तेरी विरह की अग्नी में, जल जाऊगी --- तेरी वंशी ---
तेरे बिन ओ --- तेरी वंशी ---

④ मेंने तुम्हसे ही प्रीत लगाई, कन्हा तुम्हको दूँ अपनी दुहाई
मेरे दिल में बसा तू कन्हाई, पास रहके भी पास में न आई
पानी बिन मीन जैसे तड़प जाऊगी --- तेरी वंशी ---
तेरे बिन ओ --- तेरी वंशी ---

⑤ कन्हा, लीला जो तुम्हने रचाई, मेरे मन को अति प्यारी भाई
बात मेरी समझ में न आई, तेरी महिमा समझने है गाई
में तो तेरी दिवानी कहाऊगी --- तेरी वंशी ---
तेरे बिन ओ --- तेरी वंशी ---

⑥ कुद तो मानले, ओ साँवरे तू मेरी मैं दिवानी अब हो गई हूँ तेरी
बात जानो न, तुम मेरी कौरी, भूल जाओगे सारी दिवोरी
जब भी खूँगे तुम, मैं मनाऊगी - - - - - तेरी वंशी - - - - -
तेरे बिन ओ - - - - - तेरी वंशी - - - - -

⑦ तेरे आँधरो पे वंशी बजेगी राधा दीवानी बने सजेगी
बेस्न निंदिश को आज मैं लजूगी, अपने कान्ह को मन में भूँगी
कौई किता भी रोके, मैं जाऊगी - - - - - तेरी वंशी - - - - -
तेरे बिन ओ - - - - - तेरी वंशी - - - - -

⑧ कहें "श्री बाबा श्री" सुन कहैं, मेरी भावना की करना सुनाई
तेरी भाँकी की करो का बड़ाई युगल चरणों से मोहनी जो पाई
कहती आत्मा मेरी, मैं तो तर जाऊगी - - - - - तेरी वंशी - - - - -
तेरे बिन ओ - - - - - तेरी वंशी - - - - -